PROCEEDINGS

NATIONAL SEMINAR

on

Challenges & Road Ahead : A Macro-Cosmic Analysis of Sustainable Development

Sponsored By Higher Education Department, Govt. of U.P.

1-2 Feb. 2014

under the auspices of

V.R.A.L. Govt. Mahila College, Bareilly (U.P.)

(Affiliated to M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly (U.P.)

पर्यावरण संवर्धन की अवधारणा तथा वेद औ...

डा0 वी0 नाज, एसोसिएट प्रोफेसर संस्कृत, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिलासपुर, रामपुर

शोधपत्र सारांश

परि एवं आ उपसर्ग पूर्वक वृ धातु से ल्युट् प्रत्यय से निष्पन्न पर्यावरण शब्द का अर्थ है हमारे चारों ओर का घेरा। इसके अन्तर्गत वायु मण्डल, जल मण्डल एवं स्थल मण्डल के सभी भौतिक तथा रसायनिक तत्व सम्मिलित हैं।सभी जीवित वस्तुयें अपने पर्यावरण से [illegible] प्रभावित होती हैं। पर्यावरण के सभी जीवदायी तत्वों का विवेचन हमें सार्वकालिक, सार्वभौमिक अपौरुषेय ग्रन्थ वेदों एवं कुरआन में प्राप्त होता है इनमें वर्णित सूक्त एवं आयते पर्यावरण के घटकों के रुप में हैं। पृथ्वी के सम्बन्ध में अथर्ववेद में पूरा एक पृथ्वी सूक्त तथा कुरआन में सूरा हिज्र सूरा अल फुरकान एवं सूरा लुकमान में आयतें प्राप्त होती हैं जो पृथ्वी की सतह तथा पृथ्वी के गर्भ में पाये जाने वाली विभिन्न सम्पत्तियों के विषय में बताती हैं अथर्ववेद में 'यत् ते मध्यं पृथिवी यास्त उर्जस्तन्वः संबभूवः' तथा कुंरआन में 'वल–अर–जमददनाहा व अलकैना फीहा खासि–वअमबत्ना फीहा मिन कुल्लिशैइम् मौजून' कहकर उन समस्त वनस्पतियों, पेड़–पौधों,जल आदि आवश्यक वस्तुओं की ओर संकेत कर दिया है जो मनुष्य एवं सभी जीव–जन्तुओं को आवश्यक उर्जा प्रदान करती है।

जल सृष्टि का आद्य तत्व है। ऋग्वेद मे शुद्वजलों में अमृत एवं औषधियों का निवास रहता है तथा कुरआन में 'हमने प्रत्येक जीवित वस्तु पानी से बनायी' जैसे कथन यह स्पष्ट करते हैं कि प्रत्येक जीवित वस्तु अपने अस्तित्व हेतु जल पर निर्भर है। ऋग्वेद,अथर्ववेद एवं कुरआन की सूरा अल फुरकान तथा अलरुम में जल के सम्बन्ध में वर्णन प्राप्त होते हैं।

वायु पर्यावरण एवं मनुष्य जीवन में साक्षात सम्बन्ध है।वायु जीवन की आधारशिला है।ऋग्वेद और कुरआन की सूरा अल साद् में वायु के सम्बन्ध मे बताया गया है।

अतः पृथ्वी,जल, वायु, पशु–पक्षी, फल–फूल एवं अन्न से सम्पन्न यह पर्यावरण पूर्णतः संतुलित तथा सृष्टि के नियमों से बॅधा है।धार्मिक ग्रन्थों मे उल्लिखित मंत्र एवं आयतें मनुष्य की ऐसी संयमित दिनचर्या की ओर संकेत करती हैं जो पर्यावरण के अनुकूल हो। ये मानव मात्र मे पर्यावरण के प्रति सकारात्मक एवं सृजनात्मक दृष्टिकोण विकसित करती हैं। वर्तमान वैश्वीकरण,औद्योगीकरण एवं तकनीकीकरण के युग मे प्रदूषण से ग्रस्त सम्पूर्ण पर्यावरणीय घटकों के संवर्धन एवं संरक्षण हेतु इन ग्रन्थों में वर्णित तथ्यों पर चिन्तन,मनन आवश्यक है।

विकास का मॉडल–स्थानीय परिस्थितिकी एवं संस्कृति में संगीत

डॉ0 बबली अरूण, असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
कु0 मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर।

शोधपत्र सारांश

भारतीय संस्कृति को प्रायः तीन दृष्टियों से देखा जाता है। एक है परम्परावादियों की दृष्टि और दूसरी है इसके प्रतिवाद रूप आधुनिकतावादियों की दृष्टि जो सारी प्राचीन परम्परा को अन्धविश्वास मानती है। व्यक्ति समाज और देश के लिए दोनों ही अहितकर सिद्ध हुई है। इनसे भिन्न एक और दृष्टि है। इतिहास मूलक समन्वयात्मक दृष्टि जो प्राचीनकाल से ही हमारे देश में विद्यमान है। इसी दृष्टि के सहारे साम्प्रदायिक विरोध और विषमताओं के स्थान पर एकसूत्रता लाकर नये भारत के निर्माण का एक दृढ़ आधार बनाया जा सकता है।

भारतवर्ष में हम लोगो की प्रायः यही प्रवृत्ति रहती है कि हम बड़े–बड़े धार्मिक आन्दोलनों को अवतारी महापुरूषों को और बड़ी–बड़ी ऐतिहासिक घटनाओं को पूर्वापर परिस्थितियों से असम्बद्ध तथा असम्पृक्त अथवा आकस्मिक घटना को संगीत के माध्यम से व्यक्त करने की प्रथा रही है। चाहे तो बौद्धकाल की थेरीगाथा हो या मोहम्मद साहब से सम्बन्धित कर्बला की घटना, वैदिक काल के वेद हो या आधुनिक काल के नित नवीन प्रयोग इन सभी को व्यक्त करने के लिए संगीत को ही माध्यम बनाया गया है।